VIKAS P.U. COLLEGE, MANGALURU

SECOND PU ANNUAL 2019 EXAMINATION
ANSWER KEY

Subject : **HINDI** (Code: 03)

Class : **II PUC** Time : 3:15 hours
Date : **15-3-2019** Marks: 100

I. अ. एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए । 6 x 1 = 6

1 **जो कमाता है** उसी का घर में राज होता हैं।
2. माँ के चहरे पर **उदासी** थी।
3. शताब्दी की सबसे बडी उपलब्धि १५ अगस्त १९४७।
4. विश्वेश्वरय्या समय के बडे पाबंद थे।
5. भोलाराम का जीव यमदूत को चकमा दे गया।
6. शिन्कन्सेन का शाब्दिक अर्थ – 'न्यू ट्रंक लाइन' है।

आ. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखिए । 3 x 3 = 9

7. झूठ की उत्पत्ति पाप कुटिलता और कायरता के कारण होती है। झूठ बोलने और भी कई रूपों को देख सकते हैं। चुप रहना, किसी बात को बढाकर कहना, किसी बात को छिपाना, भेद बदलना, झूठ झूठ दूसरों के साथ हाँ में हाँ मिलाना, प्रतिज्ञा करके उसे पूरा न करना और सत्य को न बोलना इत्यादि।

8. प्रदूषण के बारे में गंगा मैय्या की विचार है कि– गंगा मैय्या पूर्णरूप से प्रदूषित हो चुकी है। प्रदूषण अपने आप समाप्त नहीं हो जाता है। जो यह कहते हैं वे उल्लू ही नहीं उल्लू के अस्थावान शिष्य भी थे। जब वातावरण में ही प्रदूषण हो गया है तब कैसे गंगा मैय्या इससे बच सकती है। जीवन मूल्यों का जब अंतिम संस्कार कर दिया जाता है तब यही परिणाम होता है। गंगा मैय्या पूर्ण रूप से प्रदूषित है।

9. 'कृष्णराजसागर' बाँध के निर्माण से जहाँ उद्योगों के लिए बिजली प्राप्त हुई, वहीं पर सिंचाई के लिए सुन्दर बनाने की दिशा में वृंदावन उद्यान बनवाया था। मैसूर की शासन व्यवस्थाओं में भी कई सुधार किये। पंचायतों की व्यवस्था की। गाँव और शहरों में जनता के द्वारा प्रतिनिधि चुने गये, जो वहाँ के सुधार कार्यों में सरकार को सलाह देने लगे। इस प्रकार जनता सरकार के बीच सहयोग की भावना बढी और राज्य के विकास में अपना योगदान दिया है।

10. बरामदे में बैठी माँ को देखकर चीफ़ ने कहा कि पुअर डियर। चीफ़ और मेहमान को देखकर माँ घबराई। वह खडे ही बोलें नमस्ते। लेकिन माँ के हाथ में माला होने के नाते वह ठीक तरह से नमस्ते नहीं कर पायी। जब चीफ़ हाथ बढाया तो माँ घबरा उठी। घबराहट में माँ ने बायाँ हाथ ही साहब के दोनों हाथ रख दिया। चीफ़ हाथ हिलाकर पूछने लगा कि – हाउ डू यू डू? माँ धीरे से सकुचाते हुए बोलीं–हाउ डू डू...। इस तरह चीफ़ और माँ की मुलाकात हो गया।

11. टफ़्स के पुस्तकालय चार मंजिल की इमारत है। हर मंजिल पर विशाल वाचनालय है। पुस्तकालय में कुल ६,१८,६१५ पुस्तकें है। विद्युत चालित अलमारियों में रखी ये पुस्तक मात्र एक बटन दबाने से सामने उपलब्ध होती है। वापस बटन दबाने से अलमारी अपने आप बंध हो जायेगी। इससे जगह की बचत और पुस्तकों की सुरक्षा भी होती है। जब पुस्तकालय से बाहर आते समय एक अलारम बजाता है कि आपके पास कोई छुपी पुस्तकें नहीं है। इंडिक भाषा विभाग में कई दुर्लभ ग्रंथ देख सकते हैं। यहाँ हिन्दी अवधी, ब्रजभाषा, राजस्थानी, भोजपुरी, पहाडी और मैथिली की पुस्तकों की संग्रह है।

II. **अ) निम्नलिखित वाक्य किसने किसने कहे ?** **1 x 4 = 4**

12. बुलाकी ने भोला से कहा।

13. डॉ अंबालाल ने मन्नु भंडारी के पिताजी से कहा ।

14. शामनाथ की पत्नी ने शामनाथ से कहा।

15. नारद ने धर्मराज से कहा।

आ) निम्नलिखित में से किन्ही दो का ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए : **2 x 3 = 6**

16. **<u>संदर्भ:</u>** प्रस्तुत वाक्य उपन्यास साम्राट मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित “सुजान भगत” नामक पाठ से लिया गया है। सुजान भगत अपने पत्नि से कहता है।

व्याख्या: एक दिन गाँव में गया के यात्री आकर ठहरे। सुजान के द्वार पर उनका भोजन बना। सुजान के मन में भी गया यात्रा करने की बहुत दिनों से इच्छा थी। यह अवसर देखकर चलने को तैयार हो जाता है। तब बुलाकी रोकती है तो सुजान गंभीर भाव से कहा कि–धर्म के काम में मीन–मेष निकालना अच्छा नहीं। भगवान की इच्छा होगी तो फ़िर रूपये हो जायेंगे, उनके यहाँ किस बात की कमी है?

17. **संदर्भ:** प्रस्तुत वाक्य लेखक डा श्याम सुंदर द्वारा रचित कर्तव्य और सत्यता नामक गद्य से लिया गया है। लेखक ने हमें अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठावान बनने की प्रेरणा दी है।

व्याख्या: कर्तव्य का पूरा पालन करना हम लोगों का धर्म है और इसी से हम लोगों के चरित्र की शोभा बढती है। कर्तव्य न्याय पर निर्भर है और वह न्याय ऐसा है जिसे समझाने पर हम लोग प्रेम के साथ उसे कर सकते है।

18. **संदर्भ**:प्रस्तुत वाक्य को मन्नू भंडारी द्वारा लिखित 'एक कहानी यह भी' आत्मकथा से लिया गया है। लेखिका अपनी माँ की गुणों के बारे में पाठकों से कहा है।

व्याख्या: लेखिका अपनी माँ के बारे में इस प्रकार कहती है कि धरती से कुछ ज्यादा ही धैर्य और सहनशक्ति थी। पिताजी की हर ज्यादती को अपना प्राप्य और बच्चों की हर उचित अनुचित फ़र्माइश और जिद को अपना फ़्रर्ज समझकर बडे सहज भाव से स्वीकार करती थी। उन्होंने जिंदगी भर अपने लिए कुछ माँगा नहीं चाहा नहीं केवल दिया ही दिया था। हम भाई–बहनों का सारा लगाव माँ के साथ था। लेकिन निहायत, असहाय, मजबूरी में लिपट उनका यह त्याग कभी मेरा आदर्श नहीं बन सका... न उनकी सहिष्णुता। लेखिका माँ की गुणगान करते हुए उपर्युक्त वाक्य को कहा।

19. **संदर्भ:**इस वाक्य लेखक हरिशंकर परसाई से लिखित "भोलाराम का जीव" पाठ से लिया गया है। वर्तमान समाज की समस्याओं पर व्यंग्य से किया गया।

व्याख्या: जब नारद ने भोलाराम की दरख्वास्त पर वजन रखा तो साहब ने उसके केस की फ़ाइल लाने के लिए चपरासी को बोला। साहब ने फ़ाइल पर नाम देखकर उसे निश्चित करने के लिए पूछा– "क्या नाम बताया साधूजी आपने?" नारद ने कहा–"भोलाराम! अचानक उस फ़ाइल में से अवाज अयी 'कौन पुकार रहा है मुझे?पोस्टमैन है क्या? पेंशन का आर्डर आ गया क्या?

III. अ) एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए। 1 x 6 = 6

20. स्वामी का सेवक।
21. बिना पूँछ और सींग का पशु समान।
22. माँ ।
23. बडे पत्थर।
24. राइफ़िल–सी।
25. परदे की तरह।

आ) निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए। 2 x 3 = 6

26. नन्दन भगवान श्रीकृष्ण यमुना किनारे नटवर नागर वेश में हैं। सिर पर मोर मुकुट है, कानों में मकराकृत कुंडल है, कटि में पीतांबर और शरीर पर चन्दन का लेप है इस नटवर

नागर रूप के दर्शन मात्र से गोपियों के दूषित नेत्र तृप्त हो गए, उनके हृदय प्रज्वलित ज्वाला शान्त हो गए।

27. कवयित्री कभी भी अमर बनना नहीं चाहती थी। अमरों के लोक में वैभव, आनंद, अमर्त्यता भरे रहते हैं। परंतु इस लोक में पीडा, अवसाद, मृत्यु आदि हैं जो कवयित्री के अनुसार भगवान द्वारा प्रदान उपहार है। कवयित्री अमरों के लोक को ठुकराकर कहती हैं कि यदि तेरे कृपा से अमर लोक मिलेगा तो मैं इसे स्वीकार नहीं करूँगा क्योंकि मुझे पृथ्वी लोक में परिश्रम करके अपने आप को मिटाकर दूसरों को सुख प्रदान करने का अधिकार है।

28. कर्नाटक प्राकृतिक छवियों के लिए प्रसिद्ध है। इतना ही नहीं भारत का सौभाग्य राज्य कहा जाता है। क्योंकि कर्नाटक के बारे में विश्वभर गुणगान किया है। यहाँ पर टीपू सुल्तान जैसे महान वीरों ने राज्य किया है। रानी चेन्नम्मा की वीरता और बलिदान की गाथा हर एक कोने कोने में प्रसिद्ध है। कर्नाटक बसवेश्वर जैसे महान लोगों का जन्म स्थान रहा है। कन्नडनाडू ही भारत के वीर शैव भूमि रहा है।

29. कवि का कहना है कि– आज हमारा देश खोखली जंजीरों से बंधा हुआ है। सारे बंधन से समाज को जागृति की आवश्यकता है। ऐसे जागरण आज सभी के दिल में हो। हर एक के दिल में आग धधक रही है। भेदभाव को मिटाना चाहिए। भेदभाव को मिटाकर हर दिल में एकता पैदा करके सुखमय और आनंदमय समाज का निर्माण करना चाहिए।

इ) ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए : 4 x 2 = 8

30. संदर्भ: प्रतुत दोहे निर्गुण मत के सन्त कवि रैदास द्वारा रचित 'रैदासबानी' से लिया गया है। संत ने समता भरे राज्य के कल्पना को प्रकट किया है।

स्पष्टीकरण: समता भरे समाज या राज्य को महत्व देकर रैदास का कहना है कि– ऐसा शासन या राज्य चाहिए वहाँ पर हर एक को अन्न मिले। वर्ग भेद, अस्पृश्यता आदि बुराइयाँ समाज से दूर होकर मनुष्यों के बीच में समानता लाने का संदेश दिया गया है। समानता से भरे समाज का कामना करते हैं।

विशेषता: १) दास्य भाव का स्पष्ट है।

१) करुणा रस का चित्रण मिलता है।

२) निर्गुण भक्ति का प्रकट हुआ हैं।

३) उपमालंकार का प्रयोग हुआ है।

अथवा

संदर्भ: प्रस्तुत दोहा बिहारीलाल द्वारा रचित बिहारी के दोहे से लिया गया है। इनके पदों में नीति–भक्ति का भाव दृष्टिपात होता है।

स्पष्टीकरण: उन्मत्त करने की शक्ति सोने में धतूरे से भी सौ गुनी बढ जाती है। क्योंकि धतूरे को तो खाकर मनुष्य उन्मत्त होता है। किंतु सोने के तो पाने से ही वह उन्मत्त बन जाता है। मानव को विषय वासना और वस्तु परिग्रह की भावना उसे पतित बना देता है। इससे वह बुरे मार्ग पर चलने लगता है।

विशेषता: १) ब्रज और संस्कृत भाषा का प्रयोग हुआ है।

१) मानव–जीवन के प्रमुखता के बारे में दर्शाया गया है।

२) मन की दुर्बलता के बारे में दर्शाया गया है।

३) मनुष्य कैसे जीवन बिताना है, इसके बारे में नीति मिलता हैं।

31. <u>**संदर्भ**</u>: इस पध्यभाग को कवि नरेन्द्रशर्मा से लिखित कायर मत बन कविता से लिया गया है। प्रतिहिंसा के बारे में विचार व्यक्त करते –करते कवि ने कहा।

<u>**व्याख्या**</u>: दुष्ट के समक्ष औदार्य, क्षमाशीलता आदि गुण प्रकट करेंगे तो उसका कोई मूल्य नहीं रहता। बल्कि उन दुष्टों को सबक सिखाना है। हिंसा के प्रति हिंसा ही सही लगती है। तभी उसको तुम्हारे बल के बारे में ज़ात होगा। दुर्बल के समक्ष प्रीति–नीतियुक्त बातें जंचती हैं ना कि हिंसक के समक्ष। प्रतिहिंसा भी दुर्बलता है। कायरता सबसे बडी अपावन है।

<u>**विशेषता**</u>: १. खडिबोली हिन्दी का प्रयोग हुआ है।

२.करुणा रस का प्रयोग किए हैं।

३. दार्शनिकता तथा प्रतीकात्मकता का जानकारी मिलता है।

४. इस कविता में भाषा की सरसता, मधुरता, प्रवाहमयता तथा सरलता विद्यमान है।

अथवा

संदर्भ: प्रस्तुत कवितांश को कुँवर नारायण द्वारा रचित एक वृक्ष की हत्या नामक कविता से लिया गये हैं। कविता में कवि ने वृक्षों के प्रति अपनी संवेदना जताई है। नदी हवा जंगल की रक्षा के साथ साथ मानवीय भावनाओं की रक्षा करने की बात प्रकट हुई है।

स्पष्टीकरण: कवि उस वृक्ष को चौकीदार की संज्ञा देते हुए कहते हैं कि– जब मैं घर लौटा तो वह बूढा चौकीदार रूपी वृक्ष वहाँ नहीं था। जो हमेशा दरवाजे पर खडा मिलता था। उस वृक्ष रूपी चौकीदार का शरीर पुराने चमडे से बना था– कुचैला और खुरदुरा यानी वह चिकता नहीं था। उस वृक्ष में एक ऐसी डाल थी जैसे चौकीदार का राइफ़िल हो। उसका ऊपरी हिस्सा जो फ़ूल पत्तीदार था वह ऐसा लग रहा था जैसे चौकीदार की पगडी हो। उसका जड काफ़ी पुराना था। ऐसा लग रहा था, जैसे चौकीदार पैर में फ़टा पुराना जूता पहन रखा हो। वह काफ़ी शक्तिशाली था और स्वभाव से जिद्दी था।

विशेषता: १) खडीबोली हिन्दी क प्रयोग हुआ है।

२)कवि इस कविता में बूढे पेड की अपूर्व शक्ति और गुणों पर प्रकाश डालते है।

३)नदी, हवा, जंगल की रक्षा के बारे में प्रकाश डाला है।

४)मानवीय भावनाओं की रक्षा करने की बात इस कविता के द्वारा प्रकट हुई है।

IV. **अ) एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए ।** **5 x 1 = 5**

32. तमीज।

33. बरगद के पेड।

34. उपेन्द्रनाथ अश्क।

35. भारवि के लिए।

36. उन्नति में।

आ) **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।** **2 x 5 = 10**

37. बेला नायब तहसीलदार परेश की पत्नी थी। वह सुशिक्षित थी। उस घर में अलग तीन बहुएँ सीधी–साधी महिलायें थे। इन्दु दादा के प्यारी पोती थी। जिसने प्रायमरी स्कूल तक बडी सफ़लतापूर्वक शिक्षा पाई है। घर में सबसे अधिक पढी–लिखी समझी जाती है। घर में उसकी चलती भी खूब है और दादा अपनी इस पोती से प्यार भी बहुत करते हैं, किन्तु इस ग्रेजुयेट छोटी बहु बेला के आने से कुटुम्ब के इस तालाब में इस प्रकार लहरें–सी उठने लगी हैं जैसे स्थिर पानी में बडी ईंट गिरने से पैदा हो जाती है।

एक दिन इंदु बहुत घुस्से में दिखती हैं क्योंकि छोटी बहू बेला बात–बात पर अपने मायके के बारे में बडी ऊँची और प्रशंसा अधिक करती है। हर बात पर अपने घर की बढाई

करने से थकती नहीं थी। दूसरी बात यह थी कि मिश्रानी रजवा को काम से निकालने की धमकी दे रही थी। बेला ने रजवा को काम से इसलिए निकालनाा चाहती थी क्योंकि उसे काम ठीक ढंग से करना नहीं जानती थी। नौकरानी ने हजार मिन्नतें की फ़िर भी बेला उसकी एक न मानी। यहाँ के लोग अनपढ गँवार भी कहती थी। इंदु भी क्षमा करने के लिए कहा फ़िर भी बेला न मानी। इन कारण इंदु को अपनी भाभी बेला पर क्यों क्रोध आया

अथवा

दादा मूलराज अपने समस्त कुटुम्ब को एक यूनिट बनाये, उस पर पूर्ण रूप से अपना प्रभुत्व जमाये, उस महान वट की भाँति अटल खडे हैं, जिसकी लम्बी-लम्बी डालियाँ उनके आँगन में एक बडे छाते की भाँति धरती को आच्छादित किये हुए, अगणित घोसलों को अपने पत्तों में छिपाये, वर्षों सेतूफ़ानों और आँधियों का सामना किये जा रही हैं। वर्षों इस वट की संगति में रहने के कारण दादा वट ही की भाँति महान दिखाई देते हैं।

आयु की ७२ सर्दियाँ देख लेने पर भी दादाजी का शरीर अभी तक नहीं झुका और उनकी सफ़ेद दाढी वट की लम्बी-लम्बी दाढियों की भाँति उनकी नाभि को छूती हुई मानों धरती को छूने का प्रण किये हुए है। दादाजी मूलराज को तीन बेटे थे। एक महायुद्द में सरकार की ओर से लडते-लडते स्वर्गवास हुआ था। इसके बदले में सरकार ने दादा को एक मुरब्बा जमीन दी थी। उनकी कृपा से दादाजी संतुष्ट नहीं रहे। अपने साहस, परिश्रम, निष्टा, दूरदर्शिता और रसूख से उन्होंन एक के दस मुरब्बे बनाये। उनके दो बेटे और पोते, जमीन,फ़ार्म, डेयरी और चीनी के उस कारखाने के काम की देखभाल करते हैं, जो उन्होंने हाल ही में अपनी जमीन में लगाया है। उनके छोटे पोते परेश नायब तहसीलदार और उनकी पत्नी ग्रेजुयेट थी। उनकी तीनों बहुयें सीधी-साधी महिलायें है। उन सब में उनकी पोती इन्दु प्रायमरी स्कूल पास की थी। बहू बेला आते ही घर की स्थीति ही बदली। बेला की शिकायत थी कि सब मेरा अपमान करती हैं, सब मेरी हँसी उडाती हैं। मेरा समय नष्ट करती हैं। मैं ऐसा महसूस करती हूँ, जैसे मैं परायों में आ गयी हूँ।वह अलग घर बसाना चाहती है। घर की औरतों का शिकायत थी कि, वह मन नहीं लगाती है, अपने मायकेवालों से यहाँ के लोग चीज, रहने-पहनने का ढंग को तुलना करती है।

परंतु दादाजी सब एक-साथ रहना चाहते थे। उसको कुटुम्ब एक महान वृक्ष है और घर के सदस्य इसकी डालियाँ है। डालियों ही से पेड है और डालियाँ छोटी हों या बडी सब उसकी छाया को बढाती हैं। वे नहीं चाहते, कोई डाली इससे टूटकर पृथक हो जाए। वे घर के

सदस्यों को बुलाकर (बेला को छोडकर) उससे प्यार, इज्जत से बातें करने, काम करने, पढने–पढाने सहायता करने दिये। दादाजी मूलराज के उपाय के कारण बिछुडनेवाले संसार बच गया। इस तरह उनके अच्छे चित्रण मिला।

38. प्रतिशोध का कथानक संस्कृत के महाकवि भारवि के जीवन से संबंधित है। वह किरातार्जुनीयम महाकाव्य की रचना किये हैं। उनके पिताजी श्रीधर संस्कृत के महापंडित हैं। माता का नाम सुशीला है। भारवि शास्त्रार्थ में अनेक पंडितों को परास्त करता है। भारवि को परास्त करनेवाले पंडित कोई भी नहीं रहते। इन कारण से भारवि अहंकारी भी बन जाता है। वह सभी पंडितों को निम्न दृष्टि से देखने लगा। मद गर्व के कारण अपने को बुद्धिमान मानने लगा। श्रीधर सोचते हैं कि भारवि अहं को त्याग दे अन्यथा वह जीवन में उन्नति नहीं कर पाएगा। पंडित श्रीधर देखते हैं कि पंडितों की हार से भारवि का अहंकर बढता जा रहा है। उसे अपनी विद्वता का घमण्ड हो गया है। उसका गर्व सीमा का अतिक्रमण कर रहा है। ऐसे में वह अन्याय के मार्ग पर चले और धर्म के प्रतिकूल व्यवहार करे, यह बत पिता को कदापि पसंद नहीं है। इसलिए श्रीधर अपने बेटे भारवि को सन्मार्ग में लाना चाहते हैं और संसार में ही एक महापुरुष बनाना चाहते हैं। इसलिए वह सोचते हैं कि किसी न किसी रीती से भारवि का अहंकार को निकालना चाहते हैं। श्रीधर सोचते हैं कि उसमें अनुसासन को फ़िर से लाना है तो बाकि पंडितों के सामने भारवि को डाँटना है। पंडितों के सामने भारवि को अपमानित किया तो उसका अहंभाव नीचे उतरकर अच्छे पंडित बनेगा। इस तरह शास्त्रार्थ में पंडितों को हराने देख पिता ने भारवि के बारे में सोचा।

अथवा

१) महाकवि भारवि महाकवि भारवि किरातार्जुनीयम का रचनाकार हैं। संस्कृत के महापंडित श्रीधर और सुशीला का पुत्र है। भारवि शास्त्रार्थों का पारंगग हैं। भारवि शास्त्रार्थों में अनेक पंडितों को परास्त तो करता है। साथ ही साथ अहंकारी भी बन जाता है। परन्तुअ उसके पिताजी बेटा अहंकरी बनना नहीं चाहते हैं। इसलिए पंडितों के सामने अवमानित करते हैं।

अवमानित भारवि घर छोडकर जाते हैं। और प्रतिशोध के अग में आकर पिताजी को ही समाप्त करना चाहते हैं। शाम के समय जब वह छुपके बैठकर रात में जब पिताजी सो जाते हैं तब उसका सिर काटने के बारे में सोचते हैं। जब वह माँ–पिता का वार्तालाप सुनते हैं उनको पता चलता है कि उसका पिताजी इसलिए अवमानित करते हैं कि उसका अहंकार को मिटाता हैं।

भारवि बहुत दुखित हो जाता है और पिताजी से अपना सिर छेदन करने के लिए बोलते हैं। जब पिताजी नहीं मानते हैं तब वह शास्त्रानुसार शिक्षा देने के लिए कहते हैं कि छः मास तक श्वसुरालय में जाकर सेवा करना और जूठे भोजन पर अपना पोषण करना।

इससे भारवि का यह चरित्र मिलता है कि जब वास्तविकता पता चलता है कि अपने आप को बदलकर नामी व्यक्ति बनते हैं।

V. 39. अ. वाक्य शुध्द कीजिए । **4 x 1 = 4**

i) सुमना माधव **की** पुत्री है।

ii) **दूध** का एक गिलास दो।

iii) **मुझे** घबराना पडा।

iv) हम तीन भाई **हैं**।

40. आ. कोष्ठक में दिए गए उचित शब्दों से रिक्त स्थान भरिए । **4 x 1 = 4**

i) **भला**

ii) **पावन**

iii) विज्ञान

iv) समय

41. इ. निम्नलिखित वाक्यों को सूचनानुसार बदलिए । **3 x 1 = 3**

i) आत्मानंद देश की सेवा करता था।

ii) शीला कपडे धोती है।

iii) मैं कहानी लिखूँगी।

42. ई. निम्नलिखित मुहावरों को अर्थ के साथ जोडकर लिखिए । **4 x 1 = 4**

i) हँसी उडाना।

ii) प्रतीक्षा करना।

iii) बहुत प्यारा।

iv) मेहनत से बचना।

43. उ. अन्य लिंग रूप लिखिए । **3 x 1 = 3**

i) कवयित्री

ii) नायिका

iii) विधवा

44. ऊ. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए । **3 x 1 = 3**

i) बलहीन, दुर्बल, निर्बल

ii) दानी

iii) जलचर

45. ए. निम्नलिखित शब्दों के साथ उपसर्ग जोडकर नए शब्दों का निर्माण कीजिए । 2 x 1 = 2

i) उप+हार = उपहार

ii) अनु+शासन=अनुशासन

46. ऐ. निम्नलिखित शब्दों में से प्रत्यय अलग कर लिखिए । 2 x 1 = 2

i) विशेष+ता=विशेषता

ii) धन+वान

VI. 47. अ. किसी एक विषय पर निबंध लिखिए । 1 x 5 = 5

i) इंटरनेट के माध्यम से इंसान के काम करने के तरीके और जीवन में क्रांतिकारी बदलाव आया है। इसने व्यक्ति के समय और मेहनत की बचत की इसलिये ये जानकारी पाने के लिये बहुत फायदेमंद है साथ ही इससे कम खर्च में ज्यादा आमदनी प्राप्त हो सकती है। ये नगण्य समय लेते हुये जानकारी को आपके घर तक पहुँचाने की दक्षता रखता है। मूलत: इंटरनेट नेटवर्कों का नेटवर्क है जो एक जगह से नियंत्रण के लिये कई सारे कम्प्यूटरों को जोड़ता है। आज इसका प्रभाव दुनिया के हर कोने में देखा जा सकता है। इंटरनेट से जुड़ने के लिये एक टेलिफोन कनेक्शन, एक कम्प्यूटर और एक मॉडम की जरुरत होती है।

ये दुनिया के किसी भी जगह से पूरे विश्वभर की जानकारी ऑनलाइन प्राप्त करने में हमारी मदद करता है। इसके द्वारा हम वेबसाइट से कुछ सेकेंडों में ही जानकारी को जमा, इकट्ठा और भविष्य के लिये सुरक्षित कर सकते है। मेरे स्कूल के कम्प्यूटर लैब में इंटरनेट की सुविधा है जहाँ हम अपने प्रोजेक्ट से संबंधित जरुरी जानकारी को प्राप्त कर सकते है। मेरे कम्प्यूटर शिक्षक मुझे ऑनलाइन जानकारी प्राप्त करने के लिये इंटरनेट के उचित इस्तेमाल की सलाह देते है।

इससे ऑनलाइन संपर्क तेज और आसान हो गया है जिससे संदेश या विडियो कॉनफ्रेंस के द्वारा दुनिया में कहीं भी मौजुद लोग एक-दूसरे से जुड़ सकते है। इसकी मदद से विद्यार्थी अपनी परीक्षा, प्रोजेक्ट, तथा रचनात्मक कार्यों में भाग लेना आदि कर सकता है। इससे विद्यार्थी अपने शिक्षकों और दोस्तो से ऑनलाइन जुड़कर कई सारे विषयों पर चर्चा कर सकता है। इसकी सहायता से हम लोग विश्व में कुछ भी जानकारी प्राप्त कर सकते है जैसे-कहीं की यात्रा के लिये उसका पता तथा सटीक दूरी आदि जान सकते है।

ii) किसी समाज के निर्माण में अनुशासन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है । अनुशासन ही मनुष्य को श्रेष्ठता प्रदान करता है तथा उसे समाज में उत्तम स्थान दिलाने में सहायता करता है ।

विद्यार्थी जीवन में तो इसकी उपयोगिता और भी बढ़ जाती है क्योंकि यह वह समय होता है जब उसके व्यक्तित्व का निर्माण प्रारंभ होता है । दूसरे शब्दों में, विद्यार्थी जीवन को किसी भी मनुष्य के जीवनकाल की आधारशिला कह सकते हैं क्योंकि इस समय वह जो भी गुण अथवा अवगुण आत्मसात् करता है उसी के अनुसार उसके चरित्र का निर्माण होता है ।

कोई भी विद्यार्थी अनुशासन के महत्व को समझे बिना सफलता प्राप्त नहीं कर सकता है । अनुशासन प्रिय विद्यार्थी नियमित विद्यालय जाता है तथा कक्षा में अध्यापक द्वारा कही गई बातों का अनुसरण करता है । वह अपने सभी कार्यों को उचित समय पर करता है । वह जब किसी कार्य को प्रारंभ करता है तो उसे समाप्त करने की चेष्टा करता है ।

अनुशासन में रहने वाले विद्यार्थी सदैव परिश्रमी होते हैं। उनमें टालमटोल की प्रवृत्ति नहीं होती तथा वे आज का कार्य कल पर नहीं छोड़ते हैं। उनके यही गुण धीरे-धीरे उन्हें सामान्य विद्यार्थियों से एक अलग पहचान दिलाते हैं।

अनुशासन केवल विद्यार्थियों के लिए ही आवश्यक नहीं है, जीवन के हर क्षेत्र में इसका उपयोग है लेकिन इसका अभ्यास कम उम्र में अधिक सरलता से हो सकता है। अतः कहा जा सकता है कि यदि विद्यार्थी जीवन से ही नियमानुसार चलने की आदत पड़ जाए तो शेष जीवन की राहें सुगम हो जाती हैं।

ये विद्यार्थी ही आगे चलकर देश की राहें सँभालेंगे, कल इनके कंधों पर ही देश के निर्माण की जिम्मेदारी आएगी अत: आवश्यक है कि ये कल के सुयोग्य नागरिक बनें और अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन धैर्य और साहस के साथ करें।

वर्तमान में अनुशासन का स्तर काफी गिर गया है। अनुशासनहीनता के अनेक कारण हैं। बढ़ती हुई प्रतिस्पर्धा के दौर में आज लोग बहुत ही व्यस्त जीवन व्यतीत कर रहे हैं जिससे माता-पिता अपनी संतान को वांछित समय नहीं दे पाते हैं। इसी कारण बच्चों में असंतोष बढ़ता है जिससे अनुशासनहीनता उनमें जल्दी घर कर जाती है।

iii) भारत में अनेक ऐतिहासिक स्थल हैं। गर्मी की छुट्टी में इस बार हमने किसी ऐतिहासिक स्थल की सैर का कार्यक्रम बनाया। हमारे राज्य में साँची ऐसा ही एक प्रसिद्ध स्थल है। साँची मध्य रेलवे के बीना व भोपाल जंक्शन के बीच का रेलवे स्टेशन है। रेल द्वारा भोपाल होकर मैं अपने माता-पिता के साथ साँची पहुँचा।

अध्यात्म, कला और इतिहास में रुचि रखने वाले लोगों को साँची हमेशा आमंत्रित करती रही है। महात्मा बुद्ध के अनुयायी सम्राट अशोक ने जिन शांति स्थलों का निर्माण और विकास किया था, साँची उनमें से विश्व क्षितिज पर सबसे ऊपर है। ऊपर पहाड़ी पर बने स्तुप तत्कालीन समय की कलात्मकता, उन्नत शिल्प और शांति के जीवंत उदाहरण हैं।

सुबह करीब 9 बजे जब हम साँची पहुँचे तो स्तूपों की चढ़ाई के साथ ही अनुभव हुआ कि शांति अगर कहीं बसती है तो इस छोटी सी बस्ती में। गुलाबी धूप, खुशनुमा मौसम और आस-पास की हरियाली देख कर लगा कि महात्मा बुद्ध के संदेशों को प्रसारित करने कै लिए सम्राट अशोक का इस जगह का चुनाव बहुत उपयुक्त था।

स्तूपों पर चढाई से पूर्व हमें नीचे टिकट लेना पड़ा। संग्रहालय जाने के लिए अतिरिक्त रकम देनी पड़ी। साँची में हर स्थल में इसका पूरा ऐतिहासिक विवरण बोर्ड पर अंकित है इसलिए गाइड की आवश्यकता नहीं हुई। स्तूपों पर चढ़ाई से पूर्व हमने पुरातत्व विभाग का संग्रहालय देखा। फिर सीढ़ियों की चढ़ाई के बाद हम ऊपर पहुँचे। पत्थर के भव्य द्वार पर तीनमुखी शेरों वाला चिह्न जिसे ‘ लायन केपिटल ‘ कहते हैं, यहाँ की कथा कहता प्रतीत हुआ।

पत्थरों का कलात्मक निर्माण, वास्तुकला और शिल्पकला की दृष्टि से साँची का स्तूप बहुत अनुपम है। इसके चारों तरफ घूमकर हमने देखा तो पाया कि इसके भीतर एक आधा स्तुप और मौजूद है। इस स्तुप को नक्काशी द्वारा चारों ओर से सजाया गया

है । स्तुप के शिलालेख पर उन सभी लोगों के नाम अंकित हैं जिन्होंने वेदिकाओं और भूतल निर्माण में सहयोग दिया था । स्तूप की एक दीवार में बनी खंभों वाली छतरी के नीचे महात्मा बुद्ध की ध्यानस्थ चार मूर्तियाँ बनी ह़ुई हैं । पहाड़ी की तलहटी में बना दूसरा स्तुप मूलत : एक चबूतरे पर बना है । शिलालेख से ज्ञात ह़ुआ कि उस वृत्ताकार स्कूप का निर्माण ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी के अंतिम चरण में ह़ुआ था । इसमें अंकित फूल, पत्ती, पशु, पक्षी, नाग, मानव और किन्नरों के चित्र भी बोलते प्रतीत ह़ुए । इन भित्तिचित्रों का बुद्ध के दर्शन और जातक कथाओं से घनिष्ठ संबंध है । हमने तीसरे स्तुप की परिक्रमा भी की और पाया कि यह दूसरे स्तुप के समान ही है ।साँची का स्तूप देखने के बाद हम चाय-नाश्ता करने लगे । फिर हम साँची से 10 किमी दूर भोपाल रोड पर स्थित सतधारा गए । यहाँ समकालीन बौद्ध स्तुप हैं । सतधारा के स्कूप साँची के स्तृपों से कहीं ज्यादा आकर्षक हैं ।

उसके बाद हम विजय मंदिर देखने गए । उस ऐतिहासिक मंदिर में पहुंचने में हमें कई तंग गलियों से गुजरना पड़ा । इस अद्भुत और भव्य मंदिर को प्राचीन वास्तुकला का चमत्कार कहा जा सकता है । इस मंदिर को भारत का दूसरा सूर्य मंदिर भी कहते हैं । विजय मंदिर देखकर बेतवा नदी के पुल से गुजरते हुए हम उदयगिरि पहुँचे । इस ऐतिहासिक पहाड़ी को देखकर लगा जैसे पत्थरों को काट कर ही प्रतिमाएँ स्थापित की गई हैं । इस भव्य पहाड़ी के निकट ही गुलाब का एक आकर्षक उद्यान भी है ।

उदयगिरि की गुफाओं के छोटे से होटल में नाश्ता कर हम वहाँ से 2 किमी दूर ऐतिहासिक हेलियोडोरस का स्तंभ देखने पहुँचे । घुमक्कड़ चीनी यात्री ह्वेनसांग ने यहीं भारतीय संस्कृति से प्रभावित होकर हिन्दू धर्म ग्रहण किया था । यहाँ से लगभग 30 किमी दूर हम वट का एक वृक्ष देखने गए । इस वृक्ष को देख हम अचंभित रह गए । इस प्राचीन वृक्ष की सौ से भी अधिक शाखाएँ लगभग आधा किमी क्षेत्रफल में फैली हुई हैं । कहा जाता है कि यह एशिया महाद्वीप का सबसे बड़ा वट वृक्ष है । इसे निहारने के बाद हमने वापस साँची का रास्ता पकड़ा । हमने होटल में रात्रि विश्राम किया । अगले दिन विदिशा जाकर हमने ट्रेन पकड़ी ।

ऐतिहासिक स्थल की इस सैर से हमें अनेक प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त हुईं । यहाँ आकर लोग शांति की भाषा सुन और समझ पाते हैं । मानव को मात्र मानव समझने का संदेश देती है साँची ।

अथवा

ii) कमरा नं.३१
द्रोणाचार्य छात्रावास
विकास विद्यालय,
देहरादून–२००३००
१४ मार्च २०१९

पूज्य पिताजी,

सादर प्रणाम,

आज आपका पत्र मिला। मेरे विद्यालय का छात्रावास में स्थान मिल गया है।

हमारे छात्रावास में अभी ८० छात्रों के रहने का प्रबंध है। प्रत्येक कक्ष में दो–दो छात्र रहते हैं। छात्रावास के प्रबन्धक बहुत ही योग्य और विनोदी प्रकृती के हैं। छात्रालय के नियम बहुत कठोर है। नियमैत कार्यक्रम के अतिरिक्त कोई भी व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता। क्रीडा, अध्ययन, भोजन और शयन आदि का समय निश्चित है। छात्रावास में स्वादिष्ट एवं पौष्टिक आहार मिलता है। आप निश्चिंत रहें।

माताजी को प्रणाम, सान्वी को प्यार कहें।

आज्ञाकआरी पुत्र

आदर्श

48 आ. निम्नलिखित अनुच्छेद पढकर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए । 1 x 5 = 5

प्रश्न:
- **i)** पिताजी
- **ii)** गाँव की पाठशाला
- **iii)** पटना
- **iv)** काशी
- **v)** चार

49. इ. हिन्दी में अनुवाद कीजिए । 5 x 1 = 5

- **i)** सरला बहुत प्रतिभाशाली है।
- **ii)** भाषा सरल और सुगमता से समझनेवाली होनी चाहिए।
- **iii)** कल महीने का अंतिम दिन है।
- **iv).** गौतम बुद्ध द्वारा बौद्ध धर्म की स्थापना हुई।
- **v)** भारत में अनेक भाषाएँ हैं।

*****

VIKAS P.U. COLLEGE, MANGALURU

SECOND PU ANNUAL 2019 EXAMINATION
ANSWER KEY

Subject : **HINDI** (Code: 03)

Class : **II PUC** Time : 3:15 hours
Date : **15-3-2019** Marks: 100

I. अ. एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए । 6 x 1 = 6

1 **जो कमाता है** उसी का घर में राज होता हैं।
2. माँ के चहरे पर **उदासी** थी।
3. शताब्दी की सबसे बडी उपलब्धि १५ अगस्त १९४७।
4. विश्वेश्वरय्या समय के बडे पाबंद थे।
5. भोलाराम का जीव यमदूत को चकमा दे गया।
6. शिन्कन्सेन का शाब्दिक अर्थ – 'न्यू ट्रंक लाइन' है।

आ. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखिए । 3 x 3 = 9

7. झूठ की उत्पत्ति पाप कुटिलता और कायरता के कारण होती है। झूठ बोलने और भी कई रूपों को देख सकते हैं। चुप रहना, किसी बात को बढाकर कहना, किसी बात को छिपाना, भेद बदलना, झूठ झूठ दूसरों के साथ हाँ में हाँ मिलाना, प्रतिज्ञा करके उसे पूरा न करना और सत्य को न बोलना इत्यादि।

8. प्रदूषण के बारे में गंगा मैय्या की विचार है कि– गंगा मैय्या पूर्णरूप से प्रदूषित हो चुकी है। प्रदूषण अपने आप समाप्त नहीं हो जाता है। जो यह कहते हैं वे उल्लू ही नहीं उल्लू के अस्थावान शिष्य भी थे। जब वातावरण में ही प्रदूषण हो गया है तब कैसे गंगा मैय्या इससे बच सकती है। जीवन मूल्यों का जब अंतिम संस्कार कर दिया जाता है तब यही परिणाम होता है। गंगा मैय्या पूर्ण रूप से प्रदूषित है।

9. 'कृष्णराजसागर' बाँध के निर्माण से जहाँ उद्योगों के लिए बिजली प्राप्त हुई, वहीं पर सिंचाई के लिए सुन्दर बनाने की दिशा में वृंदावन उद्यान बनवाया था। मैसूर की शासन व्यवस्थाओं में भी कई सुधार किये। पंचायतों की व्यवस्था की। गाँव और शहरों में जनता के द्वारा प्रतिनिधि चुने गये, जो वहाँ के सुधार कार्यों में सरकार को सलाह देने लगे। इस प्रकार जनता सरकार के बीच सहयोग की भावना बढी और राज्य के विकास में अपना योगदान दिया है।

10. बरामदे में बैठी माँ को देखकर चीफ़ ने कहा कि पुअर डियर। चीफ़ और मेहमान को देखकर माँ घबराई। वह खडे ही बोलें नमस्ते। लेकिन माँ के हाथ में माला होने के नाते वह ठीक तरह से नमस्ते नहीं कर पायी। जब चीफ़ हाथ बढाया तो माँ घबरा उठी। घबराहट में माँ ने बायाँ हाथ ही साहब के दोनों हाथ रख दिया। चीफ़ हाथ हिलाकर पूछने लगा कि – हाउ डू यू डू? माँ धीरे से सकुचाते हुए बोलीं–हाउ डू डू...। इस तरह चीफ़ और माँ की मुलाकात हो गया।

11. टफ़्स के पुस्तकालय चार मंजिल की इमारत है। हर मंजिल पर विशाल वाचनालय है। पुस्तकालय में कुल ६,१८,६१५ पुस्तकें है। विद्युत चालित अलमारियों में रखी ये पुस्तक मात्र एक बटन दबाने से सामने उपलब्ध होती है। वापस बटन दबाने से अलमारी अपने आप बंध हो जायेगी। इससे जगह की बचत और पुस्तकों की सुरक्षा भी होती है। जब पुस्तकालय से बाहर आते समय एक अलारम बजाता है कि आपके पास कोई छुपी पुस्तकें नहीं है। इंडिक भाषा विभाग में कई दुर्लभ ग्रंथ देख सकते हैं। यहाँ हिन्दी अवधी, ब्रजभाषा, राजस्थानी, भोजपुरी, पहाडी और मैथिली की पुस्तकों की संग्रह है।

II. **अ)** **निम्नलिखित वाक्य किसने किसने कहे ?** **1 x 4 = 4**

12. बुलाकी ने भोला से कहा।

13. डॉ अंबालाल ने मन्नु भंडारी के पिताजी से कहा ।

14. शामनाथ की पत्नी ने शामनाथ से कहा।

15. नारद ने धर्मराज से कहा।

आ) **निम्नलिखित में से किन्ही दो का ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए :** **2 x 3 = 6**

20. **संदर्भ:** प्रस्तुत वाक्य उपन्यास साम्राट मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित "सुजान भगत" नामक पाठ से लिया गया है। सुजान भगत अपने पत्नि से कहता है।

व्याख्या: एक दिन गाँव में गया के यात्री आकर ठहरे। सुजान के द्वार पर उनका भोजन बना। सुजान के मन में भी गया यात्रा करने की बहुत दिनों से इच्छा थी। यह अवसर देखकर चलने को तैयार हो जाता है। तब बुलाकी रोकती है तो सुजान गंभीर भाव से कहा कि–धर्म के काम में मीन–मेष निकालना अच्छा नहीं। भगवान की इच्छा होगी तो फ़िर रूपये हो जायेंगे, उनके यहाँ किस बात की कमी है?

21. **संदर्भ:** प्रस्तुत वाक्य लेखक डा श्याम सुंदर द्वारा रचित कर्तव्य और सत्यता नामक गद्य से लिया गया है। लेखक ने हमें अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठावान बनने की प्रेरणा दी है।

<u>व्याख्या</u>: कर्तव्य का पूरा पालन करना हम लोगों का धर्म है और इसी से हम लोगों के चरित्र की शोभा बढती है। कर्तव्य न्याय पर निर्भर है और वह न्याय ऐसा है जिसे समझाने पर हम लोग प्रेम के साथ उसे कर सकते है।

22. **<u>संदर्भ</u>**:प्रस्तुत वाक्य को मन्नू भंडारी द्वारा लिखित 'एक कहानी यह भी' आत्मकथा से लिया गया है। लेखिका अपनी माँ की गुणों के बारे में पाठकों से कहा है।

<u>व्याख्या</u>: लेखिका अपनी माँ के बारे में इस प्रकार कहती है कि धरती से कुछ ज्यादा ही धैर्य और सहनशक्ति थी। पिताजी की हर ज्यादती को अपना प्राप्य और बच्चों की हर उचित अनुचित फ़र्माइश और जिद को अपना फ़र्ज समझकर बडे सहज भाव से स्वीकार करती थी। उन्होंने जिंदगी भर अपने लिए कुछ माँगा नहीं चाहा नहीं केवल दिया ही दिया था। हम भाई–बहनों का सारा लगाव माँ के साथ था। लेकिन निहायत, असहाय, मजबूरी में लिपट उनका यह त्याग कभी मेरा आदर्श नहीं बन सका... न उनकी सहिष्णुता। लेखिका माँ की गुणगान करते हुए उपर्युक्त वाक्य को कहा।

23. **<u>संदर्भ:</u>**इस वाक्य लेखक हरिशंकर परसाई से लिखित "भोलाराम का जीव" पाठ से लिया गया है। वर्तमान समाज की समस्याओं पर व्यंग्य से किया गया।

व्याख्या: जब नारद ने भोलाराम की दरख्वास्त पर वजन रखा तो साहब ने उसके केस की फ़ाइल लाने के लिए चपरासी को बोला। साहब ने फ़ाइल पर नाम देखकर उसे निश्चित करने के लिए पूछा– "क्या नाम बताया साधूजी आपने?" नारद ने कहा–"भोलाराम! अचानक उस फ़ाइल में से अवाज अयी 'कौन पुकार रहा है मुझे?पोस्टमैन है क्या? पेंशन का आर्डर आ गया क्या?

III. अ) एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए। 1 x 6 = 6

20. स्वामी का सेवक।

21. बिना पूँछ और सींग का पशु समान।

22. माँ ।

23. बडे पत्थर।

24. राइफ़िल–सी।

25. परदे की तरह।

आ) निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए। 2 x 3 = 6

26. नन्दन भगवान श्रीकृष्ण यमुना किनारे नटवर नागर वेश में हैं। सिर पर मोर मुकुट है, कानों में मकराकृत कुंडल है, कटि में पीतांबर और शरीर पर चन्दन का लेप है इस नटवर

नागर रूप के दर्शन मात्र से गोपियों के दूषित नेत्र तृप्त हो गए, उनके हृदय प्रज्वलित ज्वाला शान्त हो गए।

27. कवयित्री कभी भी अमर बनना नहीं चाहती थी। अमरों के लोक में वैभव, आनंद, अमर्त्यता भरे रहते हैं। परंतु इस लोक में पीडा, अवसाद, मृत्यु आदि हैं जो कवयित्री के अनुसार भगवान द्वारा प्रदान उपहार है। कवयित्री अमरों के लोक को टुकराकर कहती हैं कि यदि तेरे कृपा से अमर लोक मिलेगा तो मैं इसे स्वीकार नहीं करूँगा क्योंकि मुझे पृथ्वी लोक में परिश्रम करके अपने आप को मिटाकर दूसरों को सुख प्रदान करने का अधिकार है।

28. कर्नाटक प्राकृतिक छवियों के लिए प्रसिद्ध है। इतना ही नहीं भारत का सौभाग्य राज्य कहा जाता है। क्योंकि कर्नाटक के बारे में विश्वभर गुणगान किया है। यहाँ पर टीपू सुल्तान जैसे महान वीरों ने राज्य किया है। रानी चेन्नम्मा की वीरता और बलिदान की गाथा हर एक कोने कोने में प्रसिद्ध है। कर्नाटक बसवेश्वर जैसे महान लोगों का जन्म स्थान रहा है। कन्नडनाडू ही भारत के वीर शैव भूमि रहा है।

29. कवि का कहना है कि– आज हमारा देश खोखली जंजीरों से बंधा हुआ है। सारे बंधन से समाज को जागृति की आवश्यकता है। ऐसे जागरण आज सभी के दिल में हो। हर एक के दिल में आग धधक रही है। भेदभाव को मिटाना चाहिए। भेदभाव को मिटाकर हर दिल में एकता पैदा करके सुखमय और आनंदमय समाज का निर्माण करना चाहिए।

इ) ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए : 4 x 2 = 8

30. **संदर्भ**: प्रतुत दोहे निर्गुण मत के सन्त कवि रैदास द्वारा रचित 'रैदासबानी' से लिया गया है। संत ने समता भरे राज्य के कल्पना को प्रकट किया है।

स्पष्टीकरण: समता भरे समाज या राज्य को महत्व देकर रैदास का कहना है कि– ऐसा शासन या राज्य चाहिए वहाँ पर हर एक को अन्न मिले। वर्ग भेद, अस्पृश्यता आदि बुराइयाँ समाज से दूर होकर मनुष्यों के बीच में समानता लाने का संदेश दिया गया है। समानता से भरे समाज का कामना करते हैं।

विशेषता: १) दास्य भाव का स्पष्ट है।

४) करुणा रस का चित्रण मिलता है।

५) निर्गुण भक्ति का प्रकट हुआ हैं।

६) उपमालंकार का प्रयोग हुआ है।

अथवा

संदर्भ: प्रस्तुत दोहा बिहारीलाल द्वारा रचित बिहारी के दोहे से लिया गया है। इनके पदों में नीति–भक्ति का भाव दृष्टिपात होता है।

स्पष्टीकरण: उन्मत्त करने की शक्ति सोने में धतूरे से भी सौ गुनी बढ जाती है। क्योंकि धतूरे को तो खाकर मनुष्य उन्मत्त होता है। किंतु सोने के तो पाने से ही वह उन्मत्त बन जाता है। मानव को विषय वासना और वस्तु परिग्रह की भावना उसे पतित बना देता है। इससे वह बुरे मार्ग पर चलने लगता है।

विशेषता: १) ब्रज और संस्कृत भाषा का प्रयोग हुआ है।

४) मानव–जीवन के प्रमुखता के बारे में दर्शाया गया है।

५) मन की दुर्बलता के बारे में दर्शाया गया है।

६) मनुष्य कैसे जीवन बिताना है, इसके बारे में नीति मिलता हैं।

31. **<u>संदर्भ</u>**: इस पध्यभाग को कवि नरेन्द्रशर्मा से लिखित कायर मत बन कविता से लिया गया है। प्रतिहिंसा के बारे में विचार व्यक्त करते –करते कवि ने कहा।

<u>व्याख्या</u>: दुष्ट के समक्ष औदार्य, क्षमाशीलता आदि गुण प्रकट करेंगे तो उसका कोई मूल्य नहीं रहता। बल्कि उन दुष्टों को सबक सिखाना है। हिंसा के प्रति हिंसा ही सही लगती है। तभी उसको तुम्हारे बल के बारे में ज़ात होगा। दुर्बल के समक्ष प्रीति–नीतियुक्त बातें जंचती हैं ना कि हिंसक के समक्ष। प्रतिहिंसा भी दुर्बलता है। कायरता सबसे बडी अपावन है।

<u>विशेषता</u>: १. खडिबोली हिन्दी का प्रयोग हुआ है।

२.करुणा रस का प्रयोग किए हैं।

३. दार्शनिकता तथा प्रतीकात्मकता का जानकारी मिलता है।

४. इस कविता में भाषा की सरसता, मधुरता, प्रवाहमयता तथा सरलता विद्यमान है।

अथवा

संदर्भ: प्रस्तुत कवितांश को कुँवर नारायण द्वारा रचित एक वृक्ष की हत्या नामक कविता से लिया गये हैं। कविता में कवि ने वृक्षों के प्रति अपनी संवेदना जताई है। नदी हवा जंगल की रक्षा के साथ साथ मानवीय भावनाओं की रक्षा करने की बात प्रकट हुई है।

स्पष्टीकरण: कवि उस वृक्ष को चौकीदार की संज्ञा देते हुए कहते हैं कि– जब मैं घर लौटा तो वह बूढा चौकीदार रूपी वृक्ष वहाँ नहीं था। जो हमेशा दरवाजे पर खडा मिलता था। उस वृक्ष रूपी चौकीदार का शरीर पुराने चमडे से बना था– कुचैला और खुरदुरा यानी वह चिकता नहीं था। उस वृक्ष में एक ऐसी डाल थी जैसे चौकीदार का राइफ़िल हो। उसका ऊपरी हिस्सा जो फ़ूल पत्तीदार था वह ऐसा लग रहा था जैसे चौकीदार की पगडी हो। उसका जड काफ़ी पुराना था। ऐसा लग रहा था, जैसे चौकीदार पैर में फ़टा पुराना जूता पहन रखा हो। वह काफ़ी शक्तिशाली था और स्वभाव से जिद्दी था।

विशेषता: १) खडीबोली हिन्दी क प्रयोग हुआ है।

२)कवि इस कविता में बूढे पेड की अपूर्व शक्ति और गुणों पर प्रकाश डालते है।

३)नदी, हवा, जंगल की रक्षा के बारे में प्रकाश डाला है।

४)मानवीय भावनाओं की रक्षा करने की बात इस कविता के द्वारा प्रकट हुई है।

IV. अ) एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए । **5 x 1 = 5**

32. तमीज।

33. बरगद के पेड।

34. उपेन्द्रनाथ अश्क।

35. भारवि के लिए।

36. उन्नति में।

आ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए । **2 x 5 = 10**

37. बेला नायब तहसीलदार परेश की पत्नी थी। वह सुशिक्षित थी। उस घर में अलग तीन बहुएँ सीधी–साधी महिलायें थे। इन्दु दादा के प्यारी पोती थी। जिसने प्रायमरी स्कूल तक बडी सफ़लतापूर्वक शिक्षा पाई है। घर में सबसे अधिक पढी–लिखी समझी जाती है। घर में उसकी चलती भी खूब है और दादा अपनी इस पोती से प्यार भी बहुत करते हैं, किन्तु इस ग्रेजुयेट छोटी बहु बेला के आने से कुटुम्ब के इस तालाब में इस प्रकार लहरें–सी उठने लगी हैं जैसे स्थिर पानी में बडी ईंट गिरने से पैदा हो जाती है।

एक दिन इंदु बहुत घुस्से में दिखती हैं क्योंकि छोटी बहू बेला बात–बात पर अपने मायके के बारे में बडी ऊँची और प्रशंसा अधिक करती है। हर बात पर अपने घर की बढाई

करने से थकती नहीं थी। दूसरी बात यह थी कि मिश्रानी रजवा को काम से निकालने की धमकी दे रही थी। बेला ने रजवा को काम से इसलिए निकालनाा चाहती थी क्योंकि उसे काम ठीक ढंग से करना नहीं जानती थी। नौकरानी ने हजार मिन्नतें की फ़िर भी बेला उसकी एक न मानी। यहाँ के लोग अनपढ गँवार भी कहती थी। इंदु भी क्षमा करने के लिए कहा फ़िर भी बेला न मानी। इन कारण इंदु को अपनी भाभी बेला पर क्यों क्रोध आया

अथवा

दादा मूलराज अपने समस्त कुटुम्ब को एक यूनिट बनाये, उस पर पूर्ण रूप से अपना प्रभुत्व जमाये, उस महान वट की भाँति अटल खडे हैं, जिसकी लम्बी-लम्बी डालियाँ उनके आँगन में एक बडे छाते की भाँति धरती को आच्छादित किये हुए, अगणित घोसलों को अपने पत्तों में छिपाये, वर्षों सेतूफ़ानों और आँधियों का सामना किये जा रही हैं। वर्षों इस वट की संगति में रहने के कारण दादा वट ही की भाँति महान दिखाई देते हैं।

आयु की ७२ सर्दियाँ देख लेने पर भी दादाजी का शरीर अभी तक नहीं झुका और उनकी सफ़ेद दाढी वट की लम्बी-लम्बी दाढियों की भाँति उनकी नाभि को छूती हुई मानों धरती को छूने का प्रण किये हुए है। दादाजी मूलराज को तीन बेटे थे। एक महायुद्द में सरकार की ओर से लडते-लडते स्वर्गवास हुआ था। इसके बदले में सरकार ने दादा को एक मुरब्बा जमीन दी थी। उनकी कृपा से दादाजी संतुष्ट नहीं रहे। अपने साहस, परिश्रम, निष्टा, दूरदर्शिता और रसूख से उन्होंन एक के दस मुरब्बे बनाये। उनके दो बेटे और पोते, जमीन,फ़ार्म, डेयरी और चीनी के उस कारखाने के काम की देखभाल करते हैं, जो उन्होंने हाल ही में अपनी जमीन में लगाया है। उनके छोटे पोते परेश नायब तहसीलदार और उनकी पत्नी ग्रेजुयेट थी। उनकी तीनों बहुयें सीधी-साधी महिलायें है। उन सब में उनकी पोती इन्दु प्रायमरी स्कूल पास की थी। बहू बेला आते ही घर की स्थीति ही बदली। बेला की शिकायत थी कि सब मेरा अपमान करती हैं, सब मेरी हँसी उडाती हैं। मेरा समय नष्ट करती हैं। मैं ऐसा महसूस करती हूँ, जैसे मैं परायों में आ गयी हूँवह अलग घर बसाना चाहती है। घर की औरतों का शिकायत थी कि, वह मन नहीं लगाती है, अपने मायकेवालों से यहाँ के लोग चीज, रहने-पहनने का ढंग को तुलना करती है।

परंतु दादाजी सब एक-साथ रहना चाहते थे। उसको कुटुम्ब एक महान वृक्ष है और घर के सदस्य इसकी डालियाँ है। डालियों ही से पेड है और डालियाँ छोटी हों या बडी सब उसकी छाया को बढाती हैं। वे नहीं चाहते, कोई डाली इससे टूटकर पृथक हो जाए। वे घर के

सदस्यों को बुलाकर (बेला को छोडकर) उससे प्यार, इज्जत से बातें करने, काम करने, पढने–पढाने सहायता करने दिये। दादाजी मूलराज के उपाय के कारण बिछुडनेवाले संसार बच गया। इस तरह उनके अच्छे चित्रण मिला।

38. प्रतिशोध का कथानक संस्कृत के महाकवि भारवि के जीवन से संबंधित है। वह किरातार्जुनीयम महाकाव्य की रचना किये हैं। उनके पिताजी श्रीधर संस्कृत के महापंडित हैं। माता का नाम सुशीला है। भारवि शास्त्रार्थ में अनेक पंडितों को परास्त करता है। भारवि को परास्त करनेवाले पंडित कोई भी नहीं रहते। इन कारण से भारवि अहंकारी भी बन जाता है। वह सभी पंडितों को निम्न दृष्टि से देखने लगा। मद गर्व के कारण अपने को बुद्धिमान मानने लगा। श्रीधर सोचते हैं कि भारवि अहं को त्याग दे अन्यथा वह जीवन में उन्नति नहीं कर पाएगा। पंडित श्रीधर देखते हैं कि पंडितों की हार से भारवि का अहंकर बढता जा रहा है। उसे अपनी विद्वता का घमण्ड हो गया है। उसका गर्व सीमा का अतिक्रमण कर रहा है। ऐसे में वह अन्याय के मार्ग पर चले और धर्म के प्रतिकूल व्यवहार करे, यह बत पिता को कदापि पसंद नहीं है। इसलिए श्रीधर अपने बेटे भारवि को सन्मार्ग में लाना चाहते हैं और संसार में ही एक महापुरुष बनाना चाहते हैं। इसलिए वह सोचते हैं कि किसी न किसी रीती से भारवि का अहंकार को निकालना चाहते हैं। श्रीधर सोचते हैं कि उसमें अनुसासन को फ़िर से लाना है तो बाकि पंडितों के सामने भारवि को डाँटना है। पंडितों के सामने भारवि को अपमानित किया तो उसका अहंभाव नीचे उतरकर अच्छे पंडित बनेगा। इस तरह शास्त्रार्थ में पंडितों को हराने देख पिता ने भारवि के बारे में सोचा।

अथवा

२) महाकवि भारवि महाकवि भारवि किरातार्जुनीयम का रचनाकार हैं। संस्कृत के महापंडित श्रीधर और सुशीला का पुत्र है। भारवि शास्त्रार्थों का पारंगग हैं। भारवि शास्त्रार्थों में अनेक पंडितों को परास्त तो करता है। साथ ही साथ अहंकारी भी बन जाता है। परन्तुअ उसके पिताजी बेटा अहंकरी बनना नहीं चाहते हैं। इसलिए पंडितों के सामने अवमानित करते हैं।

अवमानित भारवि घर छोडकर जाते हैं। और प्रतिशोध के अग में आकर पिताजी को ही समाप्त करना चाहते हैं। शाम के समय जब वह छुपके बैठकर रात में जब पिताजी सो जाते हैं तब उसका सिर काटने के बारे में सोचते हैं। जब वह माँ–पिता का वार्तालाप सुनते हैं उनको पता चलता है कि उसका पिताजी इसलिए अवमानित करते हैं कि उसका अहंकार को मिटाता हैं।

भारवि बहुत दुखित हो जाता है और पिताजी से अपना सिर छेदन करने के लिए बोलते हैं। जब पिताजी नहीं मानते हैं तब वह शास्त्रानुसार शिक्षा देने के लिए कहते हैं कि छः मास तक श्वसुरालय में जाकर सेवा करना और जूठे भोजन पर अपना पोषण करना।

इससे भारवि का यह चरित्र मिलता है कि जब वास्तविकता पता चलता है कि अपने आप को बदलकर नामी व्यक्ति बनते हैं।

V. 39. अ. वाक्य शुध्द कीजिए । **4 x 1 = 4**

- **i)** सुमना माधव **की** पुत्री है।
- **ii)** **दूध** का एक गिलास दो।
- **iii)** **मुझे** घबराना पडा।
- **iv)** हम तीन भाई **हैं**।

40. आ. कोष्ठक में दिए गए उचित शब्दों से रिक्त स्थान भरिए । **4 x 1 = 4**

- **i)** **भला**
- **ii)** **पावन**
- **iii)** विज्ञान
- **iv)** समय

41. इ. निम्नलिखित वाक्यों को सूचनानुसार बदलिए । **3 x 1 = 3**

- **i)** आत्मानंद देश की सेवा करता था।
- **ii)** शीला कपडे धोती है।
- **iii)** मैं कहानी लिखूँगी।

42. ई. निम्नलिखित मुहावरों को अर्थ के साथ जोडकर लिखिए । **4 x 1 = 4**

- **i)** हँसी उडाना।
- **ii)** प्रतीक्षा करना।
- **iii)** बहुत प्यारा।
- **iv)** मेहनत से बचना।

43. उ. अन्य लिंग रूप लिखिए । **3 x 1 = 3**

- **i)** कवयित्री
- **ii)** नायिका
- **iii)** विधवा

44. ऊ. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए । **3 x 1 = 3**

- **i)** बलहीन, दुर्बल, निर्बल
- **ii)** दानी
- **iii)** जलचर

45. ए. निम्नलिखित शब्दों के साथ उपसर्ग जोडकर नए शब्दों का निर्माण कीजिए । 2 x 1 = 2

- **i)** उप+हार = उपहार
- **ii)** अनु+शासन=अनुशासन

46. ऐ. निम्नलिखित शब्दों में से प्रत्यय अलग कर लिखिए । 2 x 1 = 2

i) विशेष+ता=विशेषता

ii) धन+वान

VI. 47. अ. किसी एक विषय पर निबंध लिखिए । 1 x 5 = 5

i) इंटरनेट के माध्यम से इंसान के काम करने के तरीके और जीवन में क्रांतिकारी बदलाव आया है। इसने व्यक्ति के समय और मेहनत की बचत की इसलिये ये जानकारी पाने के लिये बहुत फायदेमंद है साथ ही इससे कम खर्च में ज्यादा आमदनी प्राप्त हो सकती है। ये नगण्य समय लेते हुये जानकारी को आपके घर तक पहुँचाने की दक्षता रखता है। मूलत: इंटरनेट नेटवर्कों का नेटवर्क है जो एक जगह से नियंत्रण के लिये कई सारे कम्प्यूटरों को जोड़ता है। आज इसका प्रभाव दुनिया के हर कोने में देखा जा सकता है। इंटरनेट से जुड़ने के लिये एक टेलिफोन कनेक्शन, एक कम्प्यूटर और एक मॉडम की जरुरत होती है।

ये दुनिया के किसी भी जगह से पूरे विश्वभर की जानकारी ऑनलाइन प्राप्त करने में हमारी मदद करता है। इसके द्वारा हम वेबसाइट से कुछ सेकेंडों में ही जानकारी को जमा, इकट्ठा और भविष्य के लिये सुरक्षित कर सकते है। मेरे स्कूल के कम्प्यूटर लैब में इंटरनेट की सुविधा है जहाँ हम अपने प्रोजेक्ट से संबंधित जरुरी जानकारी को प्राप्त कर सकते है। मेरे कम्प्यूटर शिक्षक मुझे ऑनलाइन जानकारी प्राप्त करने के लिये इंटरनेट के उचित इस्तेमाल की सलाह देते है।

इससे ऑनलाइन संपर्क तेज और आसान हो गया है जिससे संदेश या विडियो कॉनफ्रेंस के द्वारा दुनिया में कहीं भी मौजुद लोग एक-दूसरे से जुड़ सकते है। इसकी मदद से विद्यार्थी अपनी परीक्षा, प्रोजेक्ट, तथा रचनात्मक कार्यों में भाग लेना आदि कर सकता है। इससे विद्यार्थी अपने शिक्षकों और दोस्तो से ऑनलाइन जुड़कर कई सारे विषयों पर चर्चा कर सकता है। इसकी सहायता से हम लोग विश्व में कुछ भी जानकारी प्राप्त कर सकते है जैसे-कहीं की यात्रा के लिये उसका पता तथा सटीक दूरी आदि जान सकते है।

ii) किसी समाज के निर्माण में अनुशासन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है । अनुशासन ही मनुष्य को श्रेष्ठता प्रदान करता है तथा उसे समाज में उत्तम स्थान दिलाने में सहायता करता है ।

विद्यार्थी जीवन में तो इसकी उपयोगिता और भी बढ़ जाती है क्योंकि यह वह समय होता है जब उसके व्यक्तित्व का निर्माण प्रांरभ होता है । दूसरे शब्दों में, विद्यार्थी जीवन को किसी भी मनुष्य के जीवनकाल की आधारशिला कह सकते हैं क्योंकि इस समय वह जो भी गुण अथवा अवगुण आत्मसात् करता है उसी के अनुसार उसके चरित्र का निर्माण होता है ।

कोई भी विद्यार्थी अनुशासन के महत्व को समझे बिना सफलता प्राप्त नहीं कर सकता है । अनुशासन प्रिय विद्यार्थी नियमित विद्यालय जाता है तथा कक्षा में अध्यापक द्वारा कही गई बातों का अनुसरण करता है । वह अपने सभी कार्यों को उचित समय पर करता है । वह जब किसी कार्य को प्रारंभ करता है तो उसे समाप्त करने की चेष्टा करता है ।

अनुशासन में रहने वाले विद्यार्थी सदैव परिश्रमी होते हैं । उनमें टालमटोल की प्रवृत्ति नहीं होती तथा वे आज का कार्य कल पर नहीं छोड़ते हैं । उनके यही गुण धीरे-धीरे उन्हें सामान्य विद्यार्थियों से एक अलग पहचान दिलाते हैं ।

अनुशासन केवल विद्यार्थियों के लिए ही आवश्यक नहीं है, जीवन के हर क्षेत्र में इसका उपयोग है लेकिन इसका अभ्यास कम उम्र में अधिक सरलता से हो सकता है । अतः कहा जा सकता है कि यदि विद्यार्थी जीवन से ही नियमानुसार चलने की आदत पड़ जाए तो शेष जीवन की राहें सुगम हो जाती हैं ।

ये विद्यार्थी ही आगे चलकर देश की राहें सँभालेंगे, कल इनके कंधों पर ही देश के निर्माण की जिम्मेदारी आएगी अत: आवश्यक है कि ये कल के सुयोग्य नागरिक बनें और अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन धैर्य और साहस के साथ करें ।

वर्तमान में अनुशासन का स्तर काफी गिर गया है । अनुशासनहीनता के अनेक कारण हैं । बढ़ती हुई प्रतिस्पर्धा के दौर में आज लोग बहुत ही व्यस्त जीवन व्यतीत कर रहे हैं जिससे माता-पिता अपनी संतान को वांछित समय नहीं दे पाते हैं । इसी कारण बच्चों में असंतोष बढ़ता है जिससे अनुशासनहीनता उनमें जल्दी घर कर जाती है ।

iii) भारत में अनेक ऐतिहासिक स्थल हैं । गर्मी की छुट्टी में इस बार हमने किसी ऐतिहासिक स्थल की सैर का कार्यक्रम बनाया । हमारे राज्य में साँची ऐसा ही एक प्रसिद्ध स्थल है । साँची मध्य रेलवे के बीना व भोपाल जंक्शन के बीच का रेलवे स्टेशन है । रेल द्वारा भोपाल होकर मैं अपने माता-पिता के साथ साँची पहुँचा ।

अध्यात्म, कला और इतिहास में रुचि रखने वाले लोगों को साँची हमेशा आमंत्रित करती रही है । महात्मा बुद्ध के अनुयायी सम्राट अशोक ने जिन शांति स्थलों का निर्माण और विकास किया था, साँची उनमें से विश्व क्षितिज पर सबसे ऊपर है । ऊपर पहाड़ी पर बने स्तुप तत्कालीन समय की कलात्मकता, उन्नत शिल्प और शांति के जीवंत उदाहरण हैं ।

सुबह करीब 9 बजे जब हम साँची पहुँचे तो स्तूपों की चढ़ाई के साथ ही अनुभव हुआ कि शांति अगर कहीं बसती है तो इस छोटी सी बस्ती में । गुलाबी धूप, खुशनुमा मौसम और आस-पास की हरियाली देख कर लगा कि महात्मा बुद्ध के संदेशों को प्रसारित करने कै लिए सम्राट अशोक का इस जगह का चुनाव बहुत उपयुक्त था ।

स्तूपों पर चढाई से पूर्व हमें नीचे टिकट लेना पड़ा । संग्रहालय जाने के लिए अतिरिक्त रकम देनी पड़ी । साँची में हर स्थल में इसका पूरा ऐतिहासिक विवरण बोर्ड पर अंकित है इसलिए गाइड की आवश्यकता नहीं हुई । स्तूपों पर चढ़ाई से पूर्व हमने पुरातत्व विभाग का संग्रहालय देखा । फिर सीढ़ियों की चढ़ाई के बाद हम ऊपर पहुँचे । पत्थर के भव्य द्वार पर तीनमुखी शेरों वाला चिह्न जिसे ‘ लायन केपिटल ‘ कहते हैं, यहाँ की कथा कहता प्रतीत हुआ ।

पत्थरों का कलात्मक निर्माण, वास्तुकला और शिल्पकला की दृष्टि से साँची का स्तूप बहुत अनुपम है । इसके चारों तरफ घूमकर हमने देखा तो पाया कि इसके भीतर एक आधा स्तुप और मौजूद है । इस स्तुप को नक्काशी द्वारा चारों ओर से सजाया गया

है। स्तुप के शिलालेख पर उन सभी लोगों के नाम अंकित हैं जिन्होंने वेदिकाओं और भूतल निर्माण में सहयोग दिया था। स्तूप की एक दीवार में बनी खंभों वाली छतरी के नीचे महात्मा बुद्ध की ध्यानस्थ चार मूर्तियाँ बनी हुई हैं। पहाड़ी की तलहटी में बना दूसरा स्तुप मूलत : एक चबूतरे पर बना है। शिलालेख से ज्ञात हुआ कि उस वृत्ताकार स्कूप का निर्माण ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी के अंतिम चरण में हुआ था। इसमें अंकित फूल, पत्ती, पशु, पक्षी, नाग, मानव और किन्नरों के चित्र भी बोलते प्रतीत हुए। इन भित्तिचित्रों का बुद्ध के दर्शन और जातक कथाओं से घनिष्ठ संबंध है। हमने तीसरे स्तुप की परिक्रमा भी की और पाया कि यह दूसरे स्तुप के समान ही है।साँची का स्तूप देखने के बाद हम चाय-नाश्ता करने लगे। फिर हम साँची से 10 किमी दूर भोपाल रोड पर स्थित सतधारा गए। यहाँ समकालीन बौद्ध स्तुप हैं। सतधारा के स्कूप साँची के स्तूपों से कहीं ज्यादा आकर्षक हैं।

उसके बाद हम विजय मंदिर देखने गए। उस ऐतिहासिक मंदिर में पहुंचने में हमें कई तंग गलियों से गुजरना पड़ा। इस अद्‌भुत और भव्य मंदिर को प्राचीन वास्तुकला का चमत्कार कहा जा सकता है। इस मंदिर को भारत का दूसरा सूर्य मंदिर भी कहते हैं। विजय मंदिर देखकर बेतवा नदी के पुल से गुजरते हुए हम उदयगिरि पहुँचे। इस ऐतिहासिक पहाड़ी को देखकर लगा जैसे पत्थरों को काट कर ही प्रतिमाएँ स्थापित की गई हैं। इस भव्य पहाड़ी के निकट ही गुलाब का एक आकर्षक उद्‌यान भी है।

उदयगिरि की गुफाओं के छोटे से होटल में नाश्ता कर हम वहाँ से 2 किमी दूर ऐतिहासिक हेलियोडोरस का स्तंभ देखने पहुँचे। घुमक्कड़ चीनी यात्री ह्वेनसांग ने यहीं भारतीय संस्कृति से प्रभावित होकर हिन्दू धर्म ग्रहण किया था। यहाँ से लगभग 30 किमी दूर हम वट का एक वृक्ष देखने गए। इस वृक्ष को देख हम अचंभित रह गए। इस प्राचीन वृक्ष की सौ से भी अधिक शाखाएँ लगभग आधा किमी क्षेत्रफल में फैली हुई हैं। कहा जाता है कि यह एशिया महाद्वीप का सबसे बड़ा वट वृक्ष है। इसे निहारने के बाद हमने वापस साँची का रास्ता पकड़ा। हमने होटल में रात्रि विश्राम किया। अगले दिन विदिशा जाकर हमने ट्रेन पकड़ी।

ऐतिहासिक स्थल की इस सैर से हमें अनेक प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त हुईं। यहाँ आकर लोग शांति की भाषा सुन और समझ पाते हैं। मानव को मात्र मानव समझने का संदेश देती है साँची।

अथवा

ii)

कमरा नं.३१
द्रोणाचार्य छात्रावास
विकास विद्यालय,
देहरादून–२००३००
१४ मार्च २०१९

पूज्य पिताजी,

सादर प्रणाम,

आज आपका पत्र मिला। मेरे विद्यालय का छात्रावास में स्थान मिल गया है।

हमारे छात्रावास में अभी ८० छात्रों के रहने का प्रबंध है। प्रत्येक कक्ष में दो–दो छात्र रहते हैं। छात्रावास के प्रबन्धक बहुत ही योग्य और विनोदी प्रकृती के हैं। छात्रालय के नियम बहुत कठोर है। नियमैत कार्यक्रम के अतिरिक्त कोई भी व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता। क्रीडा, अध्ययन, भोजन और शयन आदि का समय निश्चित है। छात्रावास में स्वादिष्ट एवं पौष्टिक आहार मिलता है। आप निश्चिंत रहें।

मताजी को प्रणाम, सान्वी को प्यार कहें।

आज्ञाकआरी पुत्र

आदर्श

48 आ. निम्नलिखित अनुच्छेद पढकर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए। 1 x 5 = 5

प्रश्न:
- **i)** पिताजी
- **ii)** गाँव की पाठशाला
- **iii)** पटना
- **iv)** काशी
- **v)** चार

49. इ. हिन्दी में अनुवाद कीजिए। 5 x 1 = 5

- **i)** सरला बहुत प्रतिभाशाली है।
- **ii)** भाषा सरल और सुगमता से समझनेवाली होनी चाहिए।
- **iii)** कल महीने का अंतिम दिन है।
- **iv).** गौतम बुद्ध द्वारा बौद्ध धर्म की स्थापना हुई।
- **v)** भारत में अनेक भाषाएँ हैं।

*****